Impact Factor-8.575 (SJIF)

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

January-2023

(CCCLXXXIII) 383-B

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा, साहित्य, फिल्म और पत्रकारिता का योगदान

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. M.N. Kolpuke
Principal
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga Dist. Latur

Editor
Dr. Govind G. Shivshette
Department of Hindi,
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga Dist. Latur

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

20	स्वाधीनता आंदोलन की प्रतिकात्मक नाट्याभिव्यक्ति: अनुशासन पर्व प्रा. डॉ. धीरज जनार्धन व्हत्ते	73
21	भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में राष्ट्रभक्तिपरक गीतों का योगदान डॉ. करिश्मा अय्युब पठाण	78
22	पं.रामनरेश त्रिपाठी की कविता 'वह देश कौन-सा है?' में स्वदेश प्रेम डॉ.सुनील गुलाबसिंग जाधव	82
23	स्वाधीनता आंदोलन और सुभद्राकुमारी चौहान डॉ.वडचकर शिवाजी	86
24	घुमक्कड़ राहुल सांकृत्यायन डॉ गोविन्द पांडव	89
25	कवि प्रदीपजी का स्वाधीनता आंदोलन मे योगदान प्रो.डॉ.राजश्री भामरे	93
26	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य प्रा. माधवराव गजाननराव जोशी	98
27	चंद्रगुप्त नाटक में युग चेतना प्रो डॉ.ज्ञानेश्वर गाडे	103
28	स्वाधीनता आंदोलन और महाप्राण निराला का काव्य डॉ. केशव क्षिरसागर	106
29	स्वाधीनता आंदोलन और कवि माखनलाल चतुर्वेदी। डॉ विलास तुकाराम राठोड	110
30	स्वाधीनता आंदोलन का दहकता दस्तावेज माखनलाल चतुर्वेदी का काव्य प्रा.डॉ. भगवान रामकिशन कदम	114
31	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी काव्य प्रो. डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर	118
32	स्वाधीनता आंदोलन और यशपाल का औपन्यासिक साहित्य प्रा.डॉ. एकलारे चंद्रकांत नरसप्पा	121
33	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी के पत्र-पत्रिकाओं का योगदान... डॉ. प्रकाश भगवानराव शिंदे	124
34	अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल और स्वाधीनता चेतना प्रा. डॉ. लुटे मारोती भारतराव	129
35	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी फिल्म डॉ.ज्योति संभाजीराव मुंगल	133
36	स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी साहित्यकारों का योगदान डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी	138
37	स्वाधीनता आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के उपन्यासों का योगदान प्रो.डॉ.जानअहेमद के.जे.	143
38	स्वाधीनता आंदोलन में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का योगदान प्रा. डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड	146
39	स्वाधीनता आंदोलन - भारतेन्दु का साहित्य डॉ.रज़ियाशहेनाज़शे.अब्दुल्ला	149
40	स्वाधीनता आन्दोलन में हिंदी फिल्मों का योगदान रजत अभिनव,	153
41	स्वाधीनता का सच्चा स्वर : भारतेंदु हरिश्चंद्र डॉ.मीरा.पी.आई.	158

'B.Aadhar' Peer-Reviewed & Refereed Indexed Multidisciplinary International Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.575, Issue NO, (CCCLXXXIII) 383- B

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

स्वाधीनता आंदोलन और सुभद्राकुमारी चौहान

डॉ.वडचकर शिवाजी
सहाय्यक प्राध्यापक कै.र.व.म.सोनपेठ जि.परभणी ,मो.न.8983848788
Email Id : sayaliswapnilwsa@gmail.com

किसी भी राष्ट्र के विकास एवं पतन में साहित्य की ऐहम भूमिका रहती है। साहित्य समाज की मूल्यवान धरोहर है। साहित्य को हम समाज का दर्पण भी कहते है। जिस तरह बिना सूरज के चारों और अंधाकार होता है उसी प्रकार बिना साहित्य कोई भी देश प्रकाशमान नहीं हो पाता। भारतीय साहित्य हर समय मंगलकारी और कल्याणकारी रहा है। इसमें समन्वय की भावना चिरकाल से विद्यमान रही है। मानवजीवन के सर्वाधिक समिकट होने के कारण आधुनिक यु कवियों कविता में ने बड़ी शक्ति एवं महत्व प्रास कर लिया है। कविता अब काव्य मात्र मनोरंजन का साधन अथवा कल्पित काव्य नही है। वह मानव जीवन का ऐसा काव्य बना है, जिससे मनुष्य को समग्रता से समझने और अभिव्यक्त करने का प्रयास किया जा रहा हैं। आज का युग विज्ञान का युग रहा है। इस युग में हम देखते हैं कि समाज राष्ट्र में अनेक परिवर्तन आये, परंतू विज्ञान के विविध अविष्कारों के बीच भी हम जानते हैं कि मानव इतना अकेला हो गया कि इसमें प्रेम, दया, ममता, स्नेह का अभाव मिलता है। देश में एकता का अभाव सा छा गया। इन सबका कारण बन गया संघर्ष। ऐसे संघर्ष के युग में हमारा देश जो पराधीनता की जंजीरों में जकड़ा हुआ था उसकी याद आज आती है। ऐसे संघर्षमय काल में मेरी दृष्टि से समाज में यदि कोई जागृति ला सकता है तो केवल साहित्यकार ही। पराधिन भारत में संघर्ष के समय में हिन्दी कवियों ने राष्ट्रीय समस्याओं के चित्रण साथ ही साथ भारतीय जनता में क्रांति का नारा लगाकर जागृत करने का प्रयास किया है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में निराला, बालकृष्ण शर्मा नवीन अज्ञेयजी, सुभद्राकुमारी चौहान आदि के कविता मे हमे राष्ट्रप्रेम की झांकी दिखाई देती है। उपरोक्त कवियों ने राष्ट्रीय आंदोलन के विविध पक्षों की उपेक्षा न कर, आन्दोलन की चेतना के आंतरिक और बाहय निरुपण को अपने कवित का विषय बनाया। देश और काल के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए स्वातंत्र्य संग्राम के ऐतिहासिक तथ्यों कों कवियों ने ग्रहण किया। आज अगर हम पीछे मुडकर देखेंगे तो भारत के स्वाधीनता आंदोलन की परिस्थितियों के रोमांच हमारे सामने खडे हो जाते है। हममें स्फुर्ती निर्माण होती है। भारत देश को स्वतंत्र करने के लिए समाज के हर तबके के लोगोंने अपना योगदान दिया। लोगों के लढने के साधन अलग-अलग थे परंतु हर एक व्यक्ति का उद्देश स्वाधीनता थी। 1857 में झासी की राणी लक्ष्मीबाई ने जो वीरता दिखाई थी उसकी झलक सुभद्राकुमारी चौहानजी की कविता में नजर आती हैं।

"सिंहासन में हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी।
बुढ़े भारत में भी आई फिरसे नई जवानी थी।
गुमी हुई आजादी की किंमत सबने पहचान थी।
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में तलवार पुरानी थी।"

ऐसी वीरता का जयघोष किया साथ ही रचनाकारों ने वीरों को प्रेरणा देने की कोशिश अपने कलम के माध्यम से करते रहे। सुभद्राकुमारी ने लेखन के साथ-साथ राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रुप से भाग लिया था उन्होंने असहयोग आंदोलन मे सहभाग लिया था और इनका नतीजा उन्हे बंदी बनाकर जेल में डाल दिया गया। स्वाधीनता

आंदोलन के समय में कलमकार को राष्ट्रीय चेतना पर लिखने की अनुमति नहीं थी। राष्ट्रीय चेतना की भावना को लेकर लेखन करनेवाले पर अंग्रेजो की तीखी नजर थी। फिर भी रुके नहीं सुभद्राजीने अपनी वीरों का कैसा हो वसंत कविता में इस बात का उल्लेख किया है।

"भूषण अथवा कविचंद नहीं
बिजली भर दे वह छंद नहीं
है कलम बंधी स्वच्छंद नहीं
फिर हमें बताएं कौन हन्त
वीरों का कैसा हो वसंत।"

College Sonpeth Late Ramesh Warpudkar (ACS) Dist. Parbhani

इसी तरह उनकी राखी तथा राखी की चुनौती नामक कविताएँ है, जिनमें राष्ट्रीय भावना प्रभावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त हुई हैं। ये उस समय की रचनाएँ है, जब पति-पत्नी, बहन-भाई अपना सब कुछ भुलाकर स्वतन्त्रता संग्राम के सिपाही बन गए थे। इन कविताओं में सुभद्राजी उस वीर भाई का आव्हान करती है, जो भारत माँ के लिए लोहे की भारी राखी पहनने को तैयार हो।

"लो आओं भुजदण्ड उठाओं इस राखी में बँध जाओ।
भरत-भूमि की रजपूती को एक बार फिर दिखलाओं।
देखो भैया ! भेज रही हूँ तुमको, तुमको राखी आज।
साखी राजस्थान बनाकर रख लेना राखी की लाज।।"

सुभद्राकुमारी चौहान की कविताओं में शरीर को रोमांचित कर देने वाला, मन को हर्ष उल्लास से भर देनेवाला आवाहान है। क्रांति की अमर प्रेरणा झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के महत्वपूर्ण रण कौशल और साहसिक पराक्रम को सुभद्रा जीने इतनी ओजस्विता के साथ प्रस्तुत किया है कि आज भी श्रोता का खून यह कविता सुनकर खौल उठता है।

"चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले हर बोलों के मुंह, हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।"

सुभद्राजी की कविता वीरों को कैसा हो वसंत यह भाव सिर्फ उनके काव्य में ही सिंचित नहीं है। पराधीनता की ग्लानि को धोने के लिए अपनी श्रेष्ठ शक्तियों का चिंतन किया है। नवोत्थान से प्रेरित होकर स्वाधीनता की समस्या का समाधान करने का कार्य उन्होने किया है। सुभद्राकुमारी चौहान केवल राष्ट्रीय काव्यधारा की कवयित्री ही नहीं एक देशभक्त महिला भी थी। सन 1919 की जालियनवाला बाग हत्याकांड घटना से प्रभावित होकर वहां अंग्रेजों ने भारतीय निहत्थे लोगोंपर अमानुष की तरह गोलियां चलाई गई थी। जालियांवाले बाग में वसंत इस कविता में उन्होंने लिखा है।

"परिमलहीन पराग दाग-सा बना पड़ा है।
हा ! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है।
आओं प्रिय ऋतुराज ? किंतु धीरे से आना।
यह है शोक-स्थान यहाँ मत शोर मचाना।
कोमल बालक मेरे यहाँ गोली खा-खाकर
कलियाँ उनके लिए गिराना थोडी लाकर।"

साथ ही सुभद्राजी बताती है कि देश की सोई हुई शक्ति को जागृत करने के लिए देश के अतीत और वर्तमान के वीर पुरुषों के पराक्रम एवं महानता का वर्णन काव्य में प्रस्तुत किया जाना अत्यन्त प्रभावी सिद्ध होगा। इनके काव्य में प्रकृति यत्र-तत्र देखी जा सकती है। स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण स्तंभ माने जाने वाले गाँधी के तिलक को कवयित्रीने प्रमुखता के साथ याद किया है। क्योंकि उन्होने आजादी की लड़ाई को नए आयाम दिए। गाँधी जी एवं तिलक का प्रभाव उनके काव्य में राष्ट्रीय चेतना बनकर प्रस्फुलित हुआ है।

"तिलक, लाजपत, गाँधी जी भी
बंदी कितनी बार हुए।
जेल गये जनता ने पूजा।
संकट में अवतार हुए।"

सुभद्राजी की सभी कविताओं में लगभग राष्ट्रव्यापी स्वर मुखरित हुआ है। उन्होने आजादी एवं स्वतंत्रता की अभिलाषा पूर्ण कविताओं का भी सृजन किया है। वीर स्तुति की इन पंक्तियों में उनके पावन मनोभाव को देखें।

"इन कुटिया को महल समझना, हम
बालक अज्ञानी।
पूजा को तैयार खड़े हैं स्वागत !
आओं महारानी।"

निष्कर्षत :

सुभद्राकुमारी चौहान की कविताओं में अंग्रेजोंद्वारा किए गए अत्याचार एवं भारतीय वीरोंद्वारा उनके मुँह-तोड़ जवाब को बुध्दिमत्ता से प्रस्तुत किया गया है। उनकी कविता इसी इतिहास का प्रतिबिंब है। त्याग, बलिदान के समर्पण के भाव उनमें सर्वव्याप्त हैं। विद्रोह का स्वर भी इनकी कविताओं में देखने को मिलता है। अगर विद्रोह इनकी कविताओं का मूल स्वर है, तो बलिदान और समर्पण उनकी प्राण ध्वनि है। हम देखते हैं कि कइयों के अंदर एक ऐसी दृष्टि होती है, जो कलम की नोक पर आकर वीर रस का काव्य बन जाती है। या वही दृष्टि राजनैतिक और सामाजिक आंदोलनों को जन्म देती है सचमुच ही वह दृष्टि सुभद्राकुमारी चौहान के कलम में थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1)झांसी की रानी-कविता सुभद्राकुमारी चौहान
2)वीरों का कैसा हो वसंत - कविता - सुभद्राकुमारी चौहान
3)क्रांतिकारी साहित्यकार सुभद्राकुमारी चौहान-सुमित मोहन
4)भारतीय कविताओं में राष्ट्रप्रेम-डॉ.अर्जुन शतपथी
5)जालीयन वाला बाग में वसंत - कविता - सुभद्राकुमारी चौहान
6)मुकुल तथा अन्य कविताएँ - सुभद्राकुमारी चौहान
7)मुकुल तथा अन्य कविताएँ - सुभद्राकुमारी चौहान

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

We the Research Organization will do provide help for the following works listed below.

Support for Arts, Commerce & Science all Disciplines

- Research Paper Publication
- Book Chapters for Publications
- ISBN Publications Supports
- M.Phil Dissertations Publish
- Ph.D. Thesis in Book Format
- ISSN Journals with Impact Factor
- Online Book Publication
- Seminar Special Issues
- Conference Proceedings

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Mobile : 9595560278 /

Aadhar PUBLICATIONS

For Details www.aadharsocial.com

New Hanuman Nagar, In Front Of
Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College, Amravati (M.S) India Pin- 444604
, Mob-- 9595560278, Emial: aadharpublication@gmail.com Price:Rs.500/

issn 2278-9308

Impact Factor-8.632 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March-23

(CCCXCVIIII) 399

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

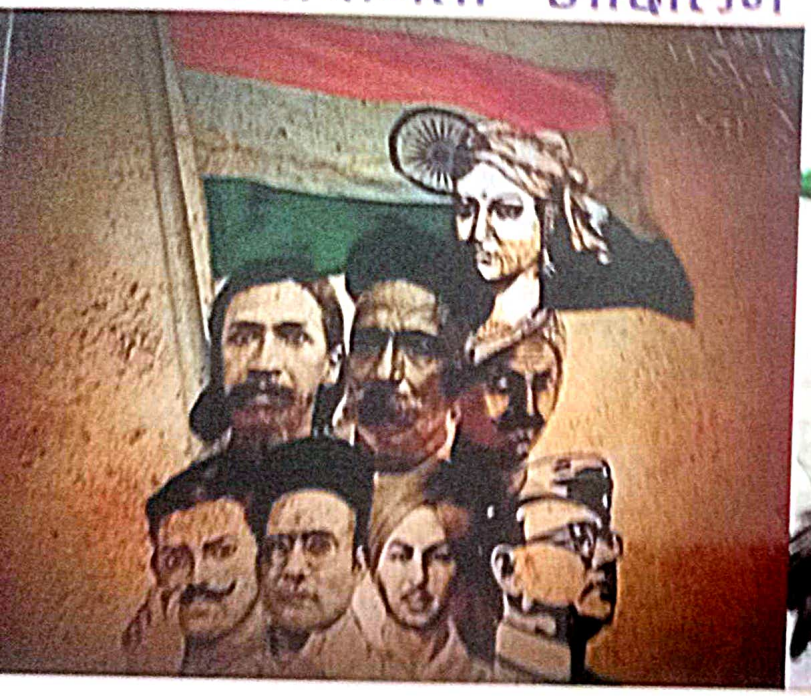

Chief Editor
rof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
search & Development
ning Institute Amravati

Executive Editor
Dr. Shaikh Md. Babar
Principal
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science
Parbhani, Dist.- Parbhani,

Editor
Dr. Sujitsingh Parihar
Dept. of Hindi,
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science
Parbhani, Dist.- Parbhani,

This Journal is Indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

or Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar P

ISSN – 2278-9308

Impact Factor – (SJIF) –8.632

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March -2023

ISSUE No- (CCCXCVIIII) 399

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

Chief Editor
Prof. Virag.S.Gawande
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Executive-Editor
Dr. Shaikh Md. Babar
Principal,
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science Parbhani, Dist.- Parbhani,
Editor
Dr. Sujitsingh Parihar
Dept. of Hindi,
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science Parbhani, Dist.- Parbhani,

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher

20	रेखा जैन कृत 'स्वाधीनता संग्राम' में चित्रित आजादी का संघर्षमय इतिहास — प्रा. माने शेषराव सुभाषचंद्र	75
21	प्रेमचंद के उपन्यास और स्वाधिनता आंदोलन — प्रा. डॉ. देशपांडे वैशाली	78
22	स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी साहित्यकारों का योगदान — शेख.बेनज़ीर	81
23	स्वातंत्र्योत्तर आदिवासी उपन्यासों में सांस्कृतिक चेतना — प्रा.डॉ. महावीर रामजी हाके	84
24	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका — प्रा.डॉ.सादिकअली हबीबसाब शेख	88
25	स्वाधीनता आंदोलन में माखनलाल चतुर्वेदी की राष्ट्रीय भाव संवेदना — डॉ. सुभाष राठोड	91
26	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी राष्ट्रभाषा — प्रा, डॉ गनी गफूर साहेब शेख	96
27	स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी कवियों का योगदान — डॉ.बालाजी भुरे	99
28	हिन्दी-काव्य में राष्ट्रीयता — डॉ.मुरलीधर अच्युतराव लहाडे	105
29	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी सिनेमा — डा.माधव पाटील	109
30	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी काव्य — प्रा.डॉ.जाधव के.के.	113
31	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी प्रचार संस्था — डॉ. गिरधर लाल शर्मा	119
32	रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना — प्रा. डॉ.पठाण खातून बेगम अकबर खाँ	123
33	आजादी का प्रेरक गीत "जाग तुझको दूर जाना" — प्रा. डॉ. संजय गणपती भालेराव	128
34	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य — प्रा.विजय सिंह ठाकुर	131
35	'भारत भारती' और 'भैरवी' में स्वाधीनता आंदोलन — डॉ. संजय नाईनवाड	133
36	दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना — डॉ. अर्चना चंद्रकांत पत्की	139
37	हिंदी काव्य में राष्ट्रीय चेतना — डॉ. रेविता बलभीम कावळे	143
38	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता — डॉ. रत्नमाला धारबा घुळे	147
39	स्वाधीनता आंदोलन और प्रेमचंद की कहानियाँ। — प्रा. आनंद लोखंडे	151
40	स्वाधीनता संग्राम के साहित्यिक नायक : प्रेमचंद — डॉ.सुजितसिंह परिहार	153
41	भीष्म साहनी कृत 'तमस' उपन्यास मे राष्ट्रीय भावना — प्रा.सुर्यकांत चोरघडे	157
42	स्वाधीनता आंदोलन और झाँसी की राणी लक्ष्मीबाई — डॉ.पजई शंकर रामभाऊ	159
43	रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीयता — डॉ.शिवाजी वडचकर	161
44	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी सिनेमा — प्रा.डॉ.विजय गणेशराव वाघ	165

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO (CCCXCVIIII) 399-A
ISSN : 2278-9308
March , 2023

रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीयता

डॉ.शिवाजी वडचकर
हिन्दी अध्ययन मंडल सदस्य स्वा.रा.ति. म. वि.नांदेड कै. रमेश वरपुडकर महाविद्यालय सोनपेठ जि. परभणी
sayaliswapnilwsa@gmail.com

सांस्कृतिक जीवन का अग्रदूत साहित्यकार (कवि) के जीवन की पहली शर्त है। व्यक्ति स्वतंत्र जिस अनुपात में उसकी स्वतंत्र चेतना की सीमाओं और व्यवस्थाओं में बांधा जाता है । उसी अनुपात में उसकी रचना अपूर्ण रह जाती है। उसकी स्वतंत्र चेतना को जितना ही अधिक मुक्त रखा जाता है। वह जीवन की अनेक संभावनाओं की अभिव्यक्ति के द्वारा उत्कृष्ट काव्य रचना प्रस्तुत करता है ।विश्व साहित्य की सर्वोत्तम कृर्तियां कवि की स्वतंत्रता के फलस्वरूप ही उत्पन्न हुई । रही दूसरी बात कवि की स्वतंत्रता के अर्थ को लेकर उनकी स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं कि कभी नैतिक बंधनों से मुक्त होकर उचित उच्छृखलताओं पर उतर आए और अपनी अनैतिक रचनाओं से अराजकता फैला दें। स्वतंत्रता के पक्षधर यह दलील देते हैं ,कि कभी क्रांतिदर्शी होता है ।उसमें युगीन चेतना का जितना अधिक प्रस्फुटन होता है उतना अन्य मानव में नहीं होता स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में देश की जनता के मन में ।राष्ट्रीय चेतना को जगाने के लिए जितने भी प्रयोग किए जा रहे थे उनमें साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। साहित्य मानवता को उजागर करता है। साहित्य के द्वारा मनुष्य अपने समाज और वह मनुष्य को समझने की कोशिश करता है ।साहित्य संस्कृति का संवाहक है। साहित्य के प्रत्येक शब्द में भाग्योदय की अप्रतिम शक्ति होती है। यह व्यक्ति को वास्तविक स्थीति से परिचित करा कर उद्दत विश्वासों से जोड़ता है।जो उसे महामानव बनाते हैं,समाज को जागृत करने हेतु लेखनी उठाने में भारतेंदु हरिश्चंद्र को हिंदी के प्रथम कवि माने जाते हैं।मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सोहनलाल द्विवेदी आदि कवियों ने यह काम किया है।जिन्होंने अपने संकल्प और चिंतन के सहारे राष्ट्रीयता की अलग जगह पर पूरे युग को आंदोलित किया।इसी वक्त रामधारी सिंह दिनकर, रामनरेश त्रिपाठी ,सुभद्रा कुमारी चौहान, सूर्यकांत त्रिपाठी' निराला'आदि हिंदी कवियों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रवादी भावना को अपने काव्य का विषय बना कर राष्ट्रीय चेतना को उसके चरम पर पहुंचाने का प्रयास किया।

रामधारी सिंह दिनकर को हम राष्ट्रीय धारा के सर्वाधिक सफल कवि मानते हैं। उनकी रचनाओं में पराधीनता के अभिशाप का प्रबल विरोध उनके संपूर्ण गर्जना को भी क्षमता के साथ लक्षित होता है। उन्होंने अपनी कलम से स्वतंत्र आंदोलन के इतिहास को इस तरह का जो बध्द किया है कि उनके कृतित्व में इतिहास बोध, समसामायिकता का परिवेश के प्रति गहनता तथा भविष्य दृष्टि का गुण आदि का समावेश मिलता है। राष्ट्रीय आंदोलन की सफलता और असफलता उत्साह आशा, निराशा की स्पष्ट झलक उनके काव्य में चित्रित हुई है। दिनकर जी ने नवजीवन की निराशा, भाव ,वेदना और आक्रोश को सबल कष्ट से उतारने का काम कभी 'रेणुका' से तो कभी 'हुंकार' से किया है। जनमानस को जागृत करते हुए वे कहते हैं :-

"युगधर्म का हुंकार हूं मैं ,प्रलय गांडीव की टंकार हूं मैं।"

इसी प्रकार कुरुक्षेत्र में हुंकार भरते

"उठो उठो कुरीतियों की तरह राहत तुम रोक दो
बड़ों बड़ों की आग में गुलामी उनको झोंक दो।"

कवि दिनकर जी ने अपने संपूर्ण रचना काल में नवयुवकों और वयस्कों में समान रूप से समाहित करने का प्रयास किया है। उनके काव्य की ओजस्वी भाषा शैली क्रांति और विद्रोह के पूर्ण विचार गंभीर चिंतन तथा मौलिक दर्शन

विषय यह विशेषता रही है। बेनीपुर जी के अनुसार "हमारे क्रांति युग का संपूर्ण प्रतिनिधित्व इस समय दिनकर रहा है। क्रांतिवादी को जिन-जिन से मंथनों से गुजरना होता है, दिनकर जी की कविता उसकी सच्ची तस्वीर रखती है।" दिनकर जी का अधिकांश साहित्य राष्ट्रीय चेतना से भरा हुआ है।" चीन से युद्ध के दिनों में दिनकर की"परशुराम की प्रतीक्षा" यह कविता देश के सैनिकों को अहिंसा त्याग कर पौरुष बनाने का आह्वान करती है। केवल आव्हान ही किया है ऐसा नहीं बल्कि पुरुष को जागृत करते हुए यह गर्जना करती है:-

"वैराग्य छोड़ बांहों की विभा संभालो,
चट्टानों की छाती से दूध निकालो।
है रुकी जहा भी धार शिलाए तोड़ो
पियुष चंद्रमाओं को पकड़ निचोडों
चढ तुंग शैल शिखरों पर सोम पियोंरे
योगियों नहीं,विजयी के सदृश जियों रे।"

बेनीपुरी जी के अनुसार हमारे क्रांति युग का संपूर्ण प्रतिनिधित्व इस समय दिनकर कर रहा है। क्रांतिवादी को जिन जिन हृदय मंत्रों से गुजरना होता है दिनकर जी की कविता उसकी सच्ची तस्वीर रखते हैं। दिनकर जी का अधिकांश साहित्य राष्ट्रीय चेतना से भरा हुआ है। चीन से युद्ध के दिनों में दिनकर की परशुराम की प्रतीक्षा यह कविता देश के सैनिकों को अहिंसा त्याग कर पुरुष बनाने का आह्वान करती है। केवल अव्हान नहीं किया है ,ऐसा नहीं बल्कि पुरुष को जागृत करते हुए गुलाम भारतीयों के मन में उत्साह और आज भरने वाले कवि ने हुंकार में अपना परिचय कुछ इस प्रकार दिया है "सोनू सिंधु में क्या गर्जन तुम्हारा तुम्हारी युगधर्म की हुंकार हूं मैं " राष्ट्रवाद का यह विकास उदारतावाद ,आत्माभिव्क्,आत्माविस्तार,प्रकृति प्रेम तथा नारी प्रेम से गुजरकर हुई है। दिनकर की राष्ट्रीयता युद्ध और प्रेम की संयुक्त अभिव्यक्ति है अंत: लगता है कि दिनकर का राष्ट्रवाद भावात्मक राष्ट्रवाद है। इस वक्त गांधीजी का युग था, गांधीजी के तमाम आंदोलन चल रहे थे। अंतिम आंदोलन 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन है। जिसमें गांधी जी ने 'करो या मरो 'का नारा बुलंद करते हुए कहा" एक मंत्र है। छोटा सा मंत्र जो मैं आपको देता हूं उसे आप अपने हृदय में अंकित कर सकते हैं और और अपनी सांस- सांस द्वारा व्यक्त कर सकते हैं।यह मंत्र है 'करो या मरो 'या तो हम भारत को आज़ाद कराएंगे या इस कोशिश में अपनी जान दे देंगे।अपनी गुलामी का दायित्व देखने के लिए हम जिंदा नहीं रहेंगे।" दिनकर ने उत्सर्ग की भावना को 'रश्मीरथी' में इस तरह से लिखा है "

" लेकीन नौका तक छोड़ चली
कुछ पता नहीं किस और चली
यह बीच नदी की धारा है ।
सुझता न कुल किनारा है"।

दिनकर जी ने मैथिलीशरण गुप्त के जयद्रथ वध के अनुकरण पर ही 'प्रण भंग' काव्य का निर्माण किया था और तब से लेकर आज तक दिनकर जी ने हुंकार, रसवंती,द्वंव्दव गीत ,रेणुका,सामधेनी ,कुरुक्षेत्र,रश्मिरथी, उर्वशी परशुराम की प्रतीक्षा, बापू,सीपी और शंख जैसी काव्य की रचना की है।उन्होंने अपनी रचनाओं में सामाजिक, राजनीतिक ,धार्मिक तथा आर्थिक समस्याओं के साथ देश की आजादी के लिए साम्राज्यवादी ताकतों के विरुद्ध विद्रोह एवं क्रांति का सिंहनाद किया है। दिनकर की राष्ट्रीयता में अकर्मण्यता ,भोगवाद,भागवाद, सामाजिक ,आर्थिक असमानता ,सांप्रदायिकता और ब्राह्मणवाद का विरोध दिखता है। दिनकर की राष्ट्रीयता में जितना कर्म के चिंतन बल दिया गया है। उतना ही व्यक्ति के अभिमान पर साथ ही साथ दिनकर जी और असमानता पर आधारित सामाजिक व्यथा पर चोट करते हैं जिसमें लाख परिश्रम करने पर भी उसकी सूरत नहीं बदलती। कवि कहते हैं कितना अच्छा होता कि

सभी लोग कर्मशील होते और सभी का जीवन खुशहाल होता स्त्री, दलित, गरीब और किसानों के प्रति संवेदनशीलता उनकी राष्ट्रीय भावना की महत्वपूर्ण विशेषता है ।सामाजिक कुरीतियों धार्मिक रूढ़ियों के खिलाफ दिनकर का काव्य मानवता का प्रतीक बनकर सामने आया है हर प्रकार की नीति जड़ता मानवीयता और अन्याय के खिलाफ उनकी कविता विद्रोह करती हैं।आदमी और आदमी के बीच हर प्रकार की अनीति, जड़ता,आत्मीयता और अन्याय के खिलाफ संप्रदाय के बंधनों का विरोध कर दिनकर की भावात्मक राष्ट्रवाद को स्थापित करता है।

दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना अपनी समग्रता में दिखाई देती हैं ।वह सब साम्राज्यवाद ही नहीं अपितु सामंतवाद के भी विरोधी थे।उन्होंने इस सत्ताधिशों के विरुद्ध बेवाक होकर लिखा जो राष्ट्रीयता के चोले में पाखंड को ढके रहते हैं तथा जिनके लिए लोकतंत्र दिखावा मात्र है ।वे जो सत्ता प्राप्ति हेतु किसी भी सीमा तक जा सकते हैं ।ऐसे राष्ट्रीयता के शत्रुओं के लिए दिनकर की कविताएं आज भी एक सांस्कृतिक तमाचा है जो बनावटी राष्ट्रवाद को ललकारता है ।राष्ट्र देवता का विसर्जन और किसको नमन करूं मैं दिनकर विश्व बंधुत्व की ओर बढ़ते हैं ।वे अखिल सृष्टीके अमरत्व और शांति की मंगल कामना करते हैं। कि एक ऐसा समय है जब राष्ट्र और जाति जातिके मध्य मैत्री होगी।

" तब उतरेगी शांति मनुष्य का मन जब कोमल होगा
जहां आज है वह शीतल गंगाजल होगा । "

दिनकर का विश्वास था कि यदि समाज में क्षमता असंभव नहीं तो मात्र समाजवाद का नारा देने से मानव सुखी नहीं होगा ।

" जब तक मनुज - मनुज का यह,सुख भाग नहीं होगा सम होगृ
शमित न होगा कोलाहल ,संघर्ष नहीं कम होगा"

कहा जा सकता है कि दिनकर की राष्ट्रीय चेतना में ओजस्वी प्रवाह है। जिस पर एक और क्रांति की ज्वाला है तो दूसरी और विश्व शांति की आकांक्षा भी हैं ।उनमें जितना भावना स्वधर्म और राष्ट्र के प्रति हैं उतनी विश्व बंधुत्व की उद्धत चेतना भी है ।हर कवि की रचना युग से ज्यादा प्रभावित होती हैं और समस्याओं और गतिविधियों को अपने काव्य में मुखरित करता है।रामधारी सिंह दिनकर की कोटी के रचनाकार थे वह साहित्य और समाज के संत हैं। देश के प्रति प्रेम और निष्ठा रखना प्रत्येक सभी का कर्तव्य होता है। जिस देश के अन्य को ग्रहण करके व्यक्ति बड़ा हो उसके प्रति मर मिटने की भावना ही सच्चे देश प्रेम की परिभाषा है।"छायावादी कवियों में देशभक्ति को एक सांस्कृतिक आचरण से मंडित किया है। उसमें केवल आवेग ही नहीं है किन्तु एक स्थाई ताप है।" दिनकरने देश के प्रति अगाध स्नेह प्रदर्शित किया उनकी रचनाएं देश भक्ति और आस्था का ज्वलंत दस्तावेज है। देश प्रेम की भावना विकसित होने पर व्यक्ति की आत्मीयता बढ़ जाती है और उसे में मातृभूमि की प्रतिध्वनि झलकने लगती हैं। उस देश के समस्त पशु पक्षी पेड़ पौधे जाने पहचाने से लगते हैं तथा उनका दुख-दर्द अपना मालूम पड़ता है ।डॉ नगेंद्र ने कहां है "जब मनुष्य के राग वृत्ति का विस्तार होता है ,तो वह अपने व्यक्तित्व से परिवार, परिवार से ग्राम नगर फिर प्रदेश देश और उसके आगे विश्व तक व्यापक हो जाता है। देशभक्ति में 'स्व' का व्रत 'समग्र'देश और उसके निवासियों तक विस्तृत हो जाता है।"

दिनकर के काव्य ने यह स्पष्ट किया है कि कविता में वह शक्ति है जो अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न के विरुद्ध आग उगल सकती हैं ।तथा सत्ता के मद में चूर राजनेताओं को नींद उड़ा सकती हैं ।वे राष्ट्र की वास्तविक सत्ता जनता को ही मानते थे ।जन विरोधी ताकतों को ललकार के लिए 26 जनवरी 1950 को देश के प्रथम गणतंत्र गणतंत्र दिवस के अवसर पर कहते हैं।

" सदियों की ठंडी बुझी आग सुगी बुगा उभी
मिटटी सोने का ताज पहन इठलाती है,
दो राह सम के रथ का घर्घर नाद सुनो
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।"

दिनकर जी की परिस्थिति के अनुसार तलवार और कलम पकड़ने वाले ओजस्वी कवि हैं हालांकि दिनकर का जोड तलवार पर नहीं कलम पर ही हैं।इसलिए वे कहते हैं" दो में से तुम्हें क्या चाहिए कलम याकि तलवार "उन्हें अच्छी तरह पता है जब तक जनता शिक्षित नहीं होगी देश की एकता अधूरी रहेगी देशवासियों के अंदर राष्ट्रीय भावना का संचार तभी संभव है ।जब देश की जनता पढ़ी लिखी हो, कर्म प्रधान हो, अपने दायित्व को ठीक से समझते हो, लक्ष्य को पाने के लिए अनवरत परिश्रम पर बल देते हो उनका रश्मिरथी इसका उदाहरण है।

सारत: कहा जा सकता है कि दिनकर जी राष्ट्रीय चेतना की कवि है। देश को आजाद करने की छटपटाहट उनके काव्य में देखी जा सकती है। उन्होंने देशवासियों के अंदर राष्ट्रीय भावना पर भरपूर संचार किया है। साथ ही उन्होंने यह माना कि देश में व्याप्त असमानता, सांप्रदायिकता और ब्राह्मणवाद की वजह से देश की एकता कमजोर होती है। न्याय पर आधारित लोकतांत्रिक व्यवस्था में ही देशवासियों के अंदर बंधुता और राष्ट्रीय भावना का संचार संभावना है ।अपनी अद्भुत कौशल शक्ति के द्वारा राष्ट्रीय चेतना के बल पर जहां एक और ब्रिटिश साम्राज्यवाद से लोहा लिया वहीं दूसरी ओर जनजागृति के बल पर भारतीय समाज के लोगों के अंदर उत्साह और प्रेम और आत्मबल भरने का काम दिनकर जी ने किया है। अपनी भरपूर साहित्यिक सेवा के बल पर दिनकर साहित्य जगत के क्षितिज के चमकते रहेंगे

संदर्भ ग्रंथ सूची

1)कुरुक्षेत्र दिनकर
2) हुंकार दिनकर
3) हुंकार दिनकर
4) प्रण भंग दिनकर
5) परशुराम की प्रतिक्षा दिनकर
6)रश्मीरथी दिनकर
7) हिन्दी साहित्य कोश डा.धिरेंन्द्र वर्मा
8) आधुनिक हान्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तिया डा.नगेन्द्र
9) नील कुसुम रामधारीसिंह दिनकर